2

व्यवस्था से पूर्व की आराधना

बाइबल हमें यह नहीं बताती कि आराधना के बारे में परमेश्वर ने आदम और हव्वा पर क्या प्रकट किया था। अदन की वाटिका में से निकाले जाने तक लगता है कि वे परमेश्वर के साथ संवाद कर सकते थे और निजी तौर पर उसकी आराधना कर सकते थे। वे परमेश्वर की आराधना करते थे या नहीं या परमेश्वर से अलग किए जाने से पहले और बाद में वे परमेश्वर की आराधना कैसे करते थे, इसके बारे में प्रकट नहीं किया गया है।

बाइबल में परमेश्वर की आराधना का पहला उल्लेख कैन और हाबिल के सम्बन्ध में है (उत्पत्ति 4:3-5क)। परमेश्वर मूसा को दी गई व्यवस्था के अधीन अनाज की भेंटें स्वीकार करता था, इस कारण कुछ लोगों ने यह मान लिया है कि कैन के बलिदान के साथ समस्या यह नहीं थी कि उसने क्या भेंट किया, बल्कि बलिदान भेंट करते समय उसके व्यवहार की थी।

> विश्वास ही से हाबिल ने कैन से उत्तम बलिदान परमेश्वर के लिए चढ़ाया; और उसी के द्वारा उसके धर्मी होने की गवाही भी दी गई: क्योंकि परमेश्वर ने उसकी भेंटों के विषय में गवाही दी; और उसी के द्वारा वह मरने पर भी अब तक बातें करता है (इब्रानियों 11:4)।

हाबिल का बलिदान ''विश्वास से'' चढ़ाया गया था, जिसका अर्थ यह होना आवश्यक है कि कैन का बलिदान विश्वास से नहीं दिया गया था। परमेश्वर ने या तो सीधे या आदम के द्वारा कैन और हाबिल पर यह प्रकट किया होगा कि क्या बलिदान करना है और भेंट चढ़ाने के लिए तैयारी कैसे करनी है। हाबिल ने केवल पशु की कुर्बानी ही नहीं दी, उसने अपने झुण्ड के पहिलौठे की चर्बी भी भेंट चढ़ाई (उत्पत्ति 4:4)। ऐसा करते हुए उसे यह गवाही मिली कि वह धर्मी था (इब्रानियों 11:4)।

यूहन्ना ने लिखा कि कैन के ''काम बुरे थे, और उसके भाई के काम धर्म के थे'' (1 यूहन्ना 3:12ख)। विश्वास से वह करते हुए, जिसे करने के लिए परमेश्वर ने कहा है, धर्म से काम करना है। हाबिल ने यही किया। परमेश्वर से अधिकार पाए बिना काम करना बुरा है। कैन ने यही किया, जिस कारण उसके काम बुरे थे।

कैन और हाबिल दोनों ने परमेश्वर को बलिदान चढ़ाए (उत्पत्ति 4:3, 4)। दोनों ने ही अपने-अपने बलिदान चढ़ाकर परमेश्वर की आराधना करनी चाही थी। स्पष्टतया परमेश्वर केवल आराधना ही नहीं चाहता, बल्कि वह ऐसी आराधना की मांग करता है, जो उसे भाती हो।

उत्पत्ति की पुस्तक बलिदानों के लिए वेदियां बनाने का उल्लेख करती है, परन्तु इसमें हमेशा यह नहीं बताया जाता कि उन पर क्या भेंट किया जाता था (उत्पत्ति 12:7, 8 [देखें 13:4]; 13:18; 26:25; 33:20; 35:1-3, 7)। जब भेंट की प्रकृति बताई जाती है तो उसमें केवल व्यवस्था दिए जाने से पहले बलिदान किए जाने के रूप में पशुओं का ही उल्लेख मिलता है

(उत्पत्ति 8:20; 22:9-13)। इन तथ्यों के आधार पर हम यह निष्कर्ष निकालने में शायद सही हैं कि परमेश्वर ने हाबिल द्वारा बलिदान किए गए पशु की मांग की थी, परन्तु कैन की अनाज की कुर्बानी नहीं चाही थी।

कैन और हाबिल के बाद जल-प्रलय के बाद नूह के बलिदान तक आराधना का ढंग नहीं बताया गया। हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि शेत की सन्तान परमेश्वर की आराधना करने लग पड़ी थी, क्योंकि वे ''यहोवा से प्रार्थना करने लगे'' थे (उत्पत्ति 4:26ख)। निश्चय ही हनोक परमेश्वर की आराधना करता था, क्योंकि वह ''परमेश्वर के साथ-साथ चलता था'' (उत्पत्ति 5:24)। उसके बाद के वर्षों में पृथ्वी के लोग बहुत बुरे हो गए थे, परन्तु नूह पर परमेश्वर की कृपादृष्टि हुई थी (उत्पत्ति 6:5, 8)।

परमेश्वर के कहे अनुसार नूह ने जहाज़ बनाकर परमेश्वर में अपने विश्वास को दिखाया (इब्रानियों 11:7)। हम अनुमान लगा सकते हैं कि इस धर्मी पुरुष की प्राथमिकता आराधना करना था, क्योंकि उसने जहाज़ में से निकलने के बाद पहला काम कुर्बानी करने का किया (उत्पत्ति 8:20)। उसका बलिदान उस कृतज्ञ मन से तैयार हुआ था, जो उसे और उसके परिवार को प्रलय के भयानक विनाश में से सुरक्षित निकाल लाया था। परमेश्वर को उसकी होम बलियां ''सुखदायक सुगन्ध'' लगीं (उत्पत्ति 8:21), जो इस बात का संकेत था कि परमेश्वर नूह के बलिदानों से प्रसन्न हुआ था।

अब्राहम द्वारा वेदियां बनाने की बात का उल्लेख बाइबल में किसी भी और व्यक्ति से अधिक है। यह इस बात का संकेत है कि अब्राहम परमेश्वर के निकट था और वह हर जगह उसकी आराधना करने की तलाश में रहता था। लिखे गए में से कोई ऐसी बात नहीं है, जिससे यह संकेत मिलता हो कि वेदियां उसने केवल एक बार के इस्तेमाल के लिए बनाई हों। अधिक सम्भावना यही है कि उसने बार-बार इनका इस्तेमाल किया। हर जगह जहां भी वह गया उसका वेदियां बनाना यह संकेत देता है कि परमेश्वर की आराधना उसके लिए सबसे पहले थी।

अपने पूर्वज अब्राहम के पदचिह्नों पर चलते हुए इसहाक और याकूब ने भी वेदियां बनाईं। परमेश्वर ने कहा कि अब्राहम अपने बच्चों को प्रभु के मार्ग पर चलना सिखाएगा। (उत्पत्ति 18:19)। परमेश्वर के प्रति अब्राहम के समर्पण ने उसके वंशजों को प्रभावित किया।

व्यवस्था दिए जाने से पहले वेदियां केवल आराधना के लिए सहायक ही नहीं थीं। एंड्रयू हिल्ल ने यह ध्यान दिलाया:

> ... उत्पत्ति की पुस्तक पत्थर के खम्भे खड़े करने और डोलनों के उण्डेलने (तरल बलिदानों या अर्घ्य देने, 28:18, 22; 35:14), ईश्वरीय प्रकाशन के उत्तर में शपथ लेने (28:20; 31:13), परमेश्वर से भेंट करने की तैयारी में औपचारिक शुद्धता (35:2), वाचा की आज्ञाकारिता के चिह्न के रूप में खतने की प्रथा (17:9-14), महिमा और धन्यवाद की प्रार्थनाओं (12:8; 13:4), याचना (24:12; 25:21) और विनती (18:22-33; 20:7) सहित पुरखाओं की आराधना की कई अन्य अभिव्यक्तियों का वर्णन करती है।[1]

व्यवस्था से पूर्व परमेश्वर के एकमात्र याजक मलकिसिदेक का नाम मिलता है (उत्पत्ति

14:18-20; इब्रानियों 5:6)। वरना पुरुषों को जो याजक तो नहीं थे, परन्तु परिवार के मुखिया थे, बलिदान चढ़ाने वालों के रूप में दिखाया गया है। अय्यूब अपने परिवार की ओर से बलिदान चढ़ाता था और उसके मित्रों ने भी बलिदान चढ़ाए (अय्यूब 1:5; 42:7-9)।

सारांश

आरम्भिक काल से ही मनुष्य ने परमेश्वर को उस सब के धन्यवाद के रूप में, जो उसने उनके लिए किया, भेंटें देने की आवश्यकता को महसूस किया है। व्यवस्था दिए जाने से पहले परमेश्वर की आराधना परमेश्वर को धन्यवाद और उसके सामर्थी कामों के आधार पर की जाती थी। इस काल के दौरान आराधना चाहे मुख्यतया वेदियों पर बलिदानों पर आधारित थी, परन्तु आराधना परमेश्वर की ही होती थी। महान, भला, और परमेश्वर होने के कारण उसे आदर दिया जाता, उसे सराहा जाता, उसे ढूंढ़ा जाता, और उसकी महिमा की जाती। आराधना परमेश्वर को, और परमेश्वर के लिए और परमेश्वर की ही की जाती थी। आराधना में किसी प्रकार की आकृति या रेखाचित्र का इस्तेमाल नहीं होता था; आराधना का केन्द्र केवल परमेश्वर था।

टिप्पणी

[1]एंड्रयू ई.हिल, *एंटर हिज़ कोट्र्स विद प्रेज़!* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1993), 33. परमेश्वर की आराधना में शायद खतने को नहीं मिलाना चाहिए। जैसे अपने स्वामी की आज्ञाकारिता में स्वामी की पूजा से अन्तर किया जाना चाहिए, वैसे ही परमेश्वर की आज्ञाकारिता और परमेश्वर की आराधना में अन्तर किया जाना चाहिए।